-: भगवान विष्णु जी की आरती :-

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी ! जय जगदीश हरे ।

भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

जो ध्यावै फल पावै, दुख बिनसे मन का,

स्वामी दुख बिनसे मन का ।

सुख-संपत्ति घर आवै, कष्ट मिटे तन का ।1।

॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी,

स्वामी शरण गहूं किसकी ।

तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी ।2।

॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

तुम पूरन परमात्मा, तुम अंतरयामी,

स्वामी तुम अंतरयामी ।

पारब्रह्म परेमश्वर, तुम सबके स्वामी ।3।

॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता,

प्रभु तुम पालनकर्ता ।

मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ।4।

॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति,

स्वामी सबके प्राणपति ।

किस विधि मिलूं दयामय! तुमको मैं कुमति ।5।

॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

दीनबंधु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे,

प्रभु तुम ठाकुर मेरे ।

अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ।6।

॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा,

स्वामी पाप हरो देवा ।

श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ।7।

॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

तन-मन-धन और संपत्ति, सब कुछ है तेरा,

स्वामी सब कुछ है तेरा ।

तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा ।8।

॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

जगदीश्वरजी की आरती जो कोई नर गावे ।

कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे ।9।

॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥